M.A. SEM-I P-I

COURSE CODE:2.080

एम0ए0 हिन्दी

(प्रथम एवं द्वितीय सत्र)

प्रथम प्रश्न–पत्र – प्राचीन एवं निर्गुण काव्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

हिन्दी साहित्य का आदिकाल सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य की रीढ़ है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं को प्राचीन काव्य के विविध रूपों, भाषागत वैविध्य से अवगत कराना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। द्वितीय सत्र में निर्गुण काव्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उसकी विशेषताओं को छात्राओं को बताना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा छात्राओं को आदिकाल की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक पृष्ठभूमि का सम्पूर्ण ज्ञान हुआ।

(2) प्राचीन हिन्दी भाषा – पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, मैथिली आदि भाषाके विविध रूपों और शब्दावलियों से छात्राएं अवगत हुईं।

(3) विद्यापति की पदावली को पढ़ते हुए छात्राओं में मैथिली भाषा की कोमलता, गेयता, लयात्मकता, संगीतात्मकता को आत्मसात किया।

(4) निर्गुण काव्य के माध्यम से छात्राओं ने उलटवासी भाषा, सिद्धों और नाथों की हठयोग साधना आदि का ज्ञानार्जन किया।

(5) छात्राओं में पाठ्यक्रम के माध्यम से शुद्ध भक्ति, आध्यात्मिक चेतना और समतावादी दृष्टि का विकास हुआ।

(6) पाठ्यक्रम द्वारा अर्जित ज्ञान विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायक है।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा छात्राओं ने आदिकाल के साहित्य, प्रवृत्तियों, भाषागत वैविध्य,विभिन्न काव्य रूपों एवं निर्गुण साहित्य को समग्रता के साथ ग्रहण किया।

2. प्रश्नोत्तर विधि, सामूहिक चर्चा द्वारा छात्राओ का मूल्यांकन किया गया।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. पृथ्वीराज रासो – पद्मावती समय, सं0 डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवर सिंह

2. कीर्तिलता – प्रथम पल्लव, सं0 अवधेश प्रधान

3. विद्यापति – सं0 शिव प्रसाद सिह

5. सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

2. पृथ्वीराज रासो की भाषा – डॉ0 नामवर सिंह

3. कीर्तिलता और अवहट्ट – डॉ0 शिव प्रसाद सिंह

M.A. SEM-I P-II

COURSE CODE:2.090

एम0ए0 हिन्दी

(प्रथम एवं द्वितीय सत्र)

द्वितीयप्रश्न–पत्र –सगुण एवं रीति काव्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

मध्यकालीन सामाजिक राजनैतिक और विशेष रूप से आध्यात्मिक चेतना का छात्राओं को प्रामाणिकता के साथ साक्षात्कार कराना, इसके साथ ही तद्युगीन भाषा और शैली के वैविध्य से छात्राओं के परिचित कराना।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रायें मध्यकालीन साहित्य में प्रचिलित साहित्य की विविध शैलियों जैसे – दोहा, चौपाई, सोरठा, पद कवित्त इत्यादि से परिचित हुईं।

(2) मध्यकालीन काव्य के सशक्त भाषा के माध्यम से ब्रज और अवधी के अर्थशक्ति, अर्थ विस्तार और अर्थ संवेदना को छात्राओं ने ग्रहण किया।

(3) रीतिकालीन साहित्य जिसकी पृष्ठभूमि ही श्रृंगार है, उसके विभिन्न अवयवों जैसे विभाव, अनुभाव इत्यादि को छात्राओं ने जाना और समझा।

(4) घनानन्द के साहित्य के माध्यम से छात्रायें विभिन्न शब्दशक्तियों जैसे अभिधा, व्यंजना और खासतौर पर लक्षणा शब्दशक्ति से छात्राएं परिचित हुईं।

(5) बिहारी के भाषा में निहित सामासिकता के माध्यम से छात्राओं ने लेखनकला की बारीकी को समझा और जाना कि किस तरह से कम शब्दों में अपनी बात कही जाती है।

(6) मध्यकालीन साहित्य को पढ़ने के बाद छात्राओं में कलात्मक अभिरूचि उत्पन्न हुई।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. मध्यकालीन साहित्य को पढ़ने के बाद छात्राओं में रचनात्मक दृष्टिकोण एवं रचनात्मक क्षमता विकसित हुईं।

2. गृहकार्य, प्रश्नोत्तर विधि, सामूहिक वार्ता के द्वारा।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. भ्रमरगीत सार – सं0 आचार्य रामचन्द शुक्ल

2. बिहारी वैभव – सं0 डॉ0 लक्ष्मी सिंह

3. रामचरित मानस का उत्तर काण्ड – तुलसी दास

4. घनानन्द – सं0 डॉ0 लक्ष्मी सिंह

5. सहायक ग्रन्थ :

1. महाकवि सूरदास – नन्द दुलारे वाजपेयी, आत्मा राम एण्ड सन्स, दिल्ली।

2. भक्ति काव्य स्वरूप और संवेदना – डॉ0 रामनारायण शुक्ला, संजय बुक सेण्टर गोलघर, वाराणसी।

3'. बिहारी का नया मूल्यांकन – डॉ0 बच्चन सिंह, लोक भारती, इलाहाबाद।

4. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्य धारा – डॉ0 मनोहर लाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, वाराणसी।

M.A. SEM-I P-III

COURSE CODE:2.100

एम0ए0 हिन्दी

(प्रथम एवं द्वितीय सत्र)

तृतीयप्रश्न–पत्र –आधुनिक हिन्दी काव्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य का वह प्रस्थान बिन्दु है, जब कविता की भाषा, भाव, संवेदना एवं अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि में समग्रता के साथ बदल गयी है। छात्राओं को इस बदलती हुई काव्य साहित्य से परिचित कराना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) पुस्तक पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं की भाषा और अर्थशक्ति बढ़ी।

(2) पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं में काव्य संवेदना की शक्ति बढ़ी।

(3) छात्राओं में आधुनिक काव्य के अध्ययन से मानवतावादी, राष्ट्रीय भावना दृढ़ हुई।

(4) पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं में कल्पनाशक्ति का विस्तार हुआ।

(5) प्रकृति के विभिन्न रूपों के अध्ययन से प्राकृतिक जीवन के प्रति छात्राएं उन्मुख हुई।

(6) विभिन्न शैली से छात्राएं अवगत हुई।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. छात्राओं को साहित्य के अध्ययन के साथ ही आत्मनिर्भर बनाने का पूरा प्रयास किया गया, जिससे छात्राएं अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सके।

2. प्रश्नोत्तर विधि एवं सामूहिक चर्चा के द्वारा छात्राओं का मूल्यांकन।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. साकेत (नवम् सर्ग) मैथिलीशरण गुप्त
2. कामायनी (श्रद्धा एवं लज्जा सर्ग) जयशंकर प्रसाद
3. असाध्य वीणा – अज्ञेय
4. रागविराग – डॉ0 राम विलास शर्मा
5. तारापथ – डॉ0 दूधनाथ सिंह
6. चांद का मुंह टेढ़ा है (अंधेरे में) – मुक्तिबोध

5. सहायक ग्रन्थ :

1. छायावाद – डॉ0 नामवर सिंह
2. निराला आत्महंता आस्था – डॉ0 दूधनाथ सिंह
3. प्रसाद, निराला, अज्ञेय – रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. कविता के नये प्रतिमान – डॉ0 नामवर सिंह

5. मुक्तिबोध ज्ञान और संवेदना – नन्दकिशोर नवल

M.A. SEM-I P-IV

COURSE CODE:2.110

एम0ए0 हिन्दी

(प्रथम एवं द्वितीय सत्र)

चतुर्थप्रश्न–पत्र –आधुनिक गद्य साहित्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं – निबन्ध, नाटक, कहानी एवं उपन्यास की विशेषताओं, विकासयात्रा, कलात्मक एवं सामाजिक दृष्टियों से मूल्यांकन द्वारा छात्राओं में साहित्य अभिरूचि एवं सामाजिक सरोकार की भावना विकसित करना।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) विभिन्न काल की प्रतिनिधि कहानियों एवं कहानीकारों की विशेषताओं, सामाजिक एवं ऐतिहासिक प्रभाव, उनकी कलात्मकता से परिचय कराना।

(2) उपन्यास विधा की विशेषताओं, क्रमिक विकास महत्वपूर्ण उपन्यासकार एवं उनकी रचनाओं के अध्ययन एवं मूल्यांकन की समुचित दृष्टि विकसित करना।

(3) विभिन्न युगों में विभिन्न विषयों पर लिखे गये निबन्धों, निबन्धकारों से अवगत कराना।

(4) नाटक की विशेषताओं, विकासयात्रा महत्वपूर्ण नाटकों के अध्ययन द्वारा इस विधा का ज्ञान, समीक्षा दृष्टि विकसित करना तथा रंगमंच एवं अभिनय के प्रति रूचि उत्पन्न करना।

(5) साहित्य की इन विभिन्न विधाओं के अध्ययन द्वारा इन पर परिलक्षित सामाजिक एवं ऐतिहासिक प्रभाव सामाजिक परिवर्तन में सहित्य के योगदान से अवगत कराना।

(6) छात्राओं में साहित्यिक अभिरूचि उत्पन्न करना तथा सामाजिक सरोकार के लिए प्रेरित करना।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. साहित्य की विभिन्न विधाओं, उनकी कलात्मकता, साहित्यिक एवं सामाजिक योगदान से अवगत कराकर उनमें सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना विकसित करना, अधिक मानवीय और संवेदनशील बनाना।

2. प्रश्नोत्तर एवं समूह परिचर्चा द्वारा मूल्यांकन किया गया।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. निबन्धायन – सं0 डॉ0 अर्चना सिंह

2. हिन्दी कहानी – सं0 डॉ0 अर्चना सिंह

3. नाटक – 1. चन्द्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद

   2. आधे – अधूरे – मोहन राकेश

4. उपन्यास – 1. गोदान – प्रेमचन्द

   2. तेभ्यः स्वधा – डॉ0 नीरजा माधव

5. सहायक ग्रन्थ :

1.	प्रेमचंद एवं उनका युग	–	रामविलास शर्मा
2.	कहानी – नयी कहानी	–	नामवर सिंह
3.	हिन्दी नाटक उद्‌भव एवं विकास	–	दशरथ ओझा
4.	रंग दर्शन	–	नेमिचन्द्र जैन

M.A. SEM-I P-V

COURSE CODE:2.120

एम0ए0 हिन्दी

(प्रथम एवं द्वितीय सत्र)

पंचम्‌प्रश्न–पत्र –भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र हिन्दी आलोचना एवं आलोचक

1. पाठ्‌यक्रम का उद्‌देश्य :

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, हिन्दी आलोचना एवं आलोचकों से छात्राओं को अवगत कराना है।

2. पाठ्‌यक्रम का परिणाम :

(1) काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु एवं काव्य के प्रकार से छात्राएं परिचित हुईं।

(2) प्राचीन एवं अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं से छात्राओं को अवगत कराया गया।

(3) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से संस्कृत के आचार्यों जैसे – भरतमुनि, मम्मट, आचार्य विश्वनाथ आदि के प्रति अभिरूचि जागृत की गईं।

(4) पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों – प्लेटो एवं अरस्तू और भारतीय काव्यशास्त्रियों के काव्य सिद्धान्तों के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से छात्राओं को पश्चात्य काव्यशास्त्र से अवगत कराया गया।

(5) हिन्दी आलोचना एवं आलोचकों के माध्यम से छात्राओं में समीक्षात्मक क्षमता का विकास किया गया।

(6) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में रचनात्मक क्षमता उत्पन्न हुई जिसका उपयोग वे अपने सर्जनात्मक कौशल में कर सकती हैं।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. साहित्य के विभिन्न तत्वों एवं सिद्धान्तों के माध्यम से छात्राओं में साहित्य सृजन की प्रतिभा विकसित की गईं।
2. प्रश्नोत्तर विधि।
3. सामूहिक चर्चा।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ0 भगीरथ मिश्र
2. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त – डॉ0 गणपतिचन्द्र गुप्त

सहायक ग्रन्थ :

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन – डॉ0 बच्चन सिंह
2. आलोचक और आलोचना – डॉ0 बच्चन सिंह
3. हिन्दी आलोचना – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी

M.A. SEM-III P-I

COURSE CODE:2.180

एम0ए0 हिन्दी

(तृतीय एवं चतुर्थ सत्र)

प्रथम प्रश्न–पत्र –भाषा विज्ञान

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

हिन्दी भाषा, उसकी बोलियों तथा अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं, विकासक्रम परिवर्तन के कारणों से अवगत कराना, हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति, वर्तमान दशा–दिशा, देवनागरी लिपि की विशेषताओं तथा हिन्दी व्याकरण का बोध कराना।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन की क्षमता विकसित करना।

(2) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की उत्पत्ति, विकास, क्षेत्र विशेषताओं तथा उनकी बोलियों से अवगत कराना।

(3) शैली के स्वरूप, सामान्य एवं विशिष्ट शैली में अन्तर के कारण से परिचय कराना।

(4) हिन्दी व्याकरण – सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन
उपसर्ग – प्रत्यय आदि का ज्ञान कराना।

(5) लिपि की उत्पत्ति, देवनागरी लिपि एवं उसकी वैज्ञानिकता का परिचय प्रदान करना।

(6) हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति, समस्याएं एवं समाधान से अवगत कराना।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. हिन्दी भाषा तथा अन्य भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन की क्षमता विकसित कर वैज्ञानिक, तार्किक एवं तथ्यपूर्ण समीक्षा दृष्टि उत्पन्न करने का प्रयास किया गया। लिपि एवं व्याकरण के ज्ञान द्वारा भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए प्रेरित किया गया।

2. प्रश्नोत्तर एवं समूह परिचर्चा।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. भाषा विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी

2. हिन्दी भाषा का व्याकरण – डॉ0 उदय नारायण तिवारी

5. सहायक ग्रन्थ :

1. भाषा विज्ञान की भूमिका – डॉ0 देवेन्दनाथ शर्मा

2. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ0 राजमणि शर्मा

3. हिन्दी भाषा एवं व्याकरण – डॉ0 भोलानाथ तिवारी

M.A. SEM-III P-II

COURSE CODE:2.190

एम0ए0 हिन्दी

(तृतीय एवं चतुर्थ सत्र)

द्वितीयप्रश्न–पत्र –हिन्दी साहित्य का इतिहास

(खण्ड – क, ख)

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों से छात्राओं को परिचित कराते हुए, सम्पूर्ण प्रवृत्तियों का विस्तृत ज्ञान प्रदान करना।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) प्राचीन एवं वर्तमान समय की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक आन्दोलनों से छात्राओं का ज्ञानवर्द्धन हुआ।

(2) आदि काल से लेकर आधुनिक काल के साहित्य का अध्ययन कर छात्राओं के ज्ञानकोष का समुचित विकास हुआ।

(3) ग़द्य की विभिन्न विधाओं से छात्राओं ने लाभ उठाया तथा उनमें लेखन के प्रति रूझान जागृत हुआ।

(4) भाषा की दृष्टि से प्राचीन काल की भाषा से लेकर आधुनिक काल की भाषा के विभिन्न रूपों से परिचित हुई। जिसका निकट भविष्य में व्यावसायिक लाभ प्राप्त कर सकती हैं।

(5) गद्य की नवीन विधा डायरी लेखन, रिपोर्ताज, यात्रावृत्त, साक्षात्कार आदि के माध्यम से व्यावसायिक लाभ मिलेगा।

(6) छात्राओं में हिन्दी साहित्य के विस्तृत अध्ययन के माध्यम से आलोचनात्मक क्षमता विकसित हुईं हैं।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. भारतीय हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक का सम्पूर्ण ज्ञान छात्राओं को विधिवत प्रदान कराना, तथा आधुनिक गद्य के माध्यम से व्यावसायिकता की तरफ उन्मुख होने के लिए प्रेरित करना।

2. प्रश्नोत्तर विधि, सामूहिक चर्चा द्वारा छात्राओं का विधिवत मूल्यांकन किया गया।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 नगेन्द्र

2. हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डॉ0 वासुदेव सिंह

5. सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य स्वरूप एवं संवेदना का विकास – डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी

2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह

M.A. SEM-III P-III

COURSE CODE:2.200

एम0ए0 हिन्दी
(तृतीय एवं चतुर्थ सत्र)
तृतीयप्रश्न–पत्र –लोक साहित्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

छात्राओं को लोक जीवन के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन से परिचित एवं जागृत कराना मुख्य उद्देश्य है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) छात्राएं अपने देश और समाज में प्रचलित लोक साहित्य की विविध विधाओं लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकसंगीत को प्रमाणिक रूप से जाना।

(2) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं में लोक जीवन के कलात्मक चेतना को जागृत किया गया।

(3) दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले मुहावरे, लोकोक्तियों, लोक सुभाषित से छात्राओं में भाषा क्षमता बढ़ी।

(4) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं में लोकगीतों को गाने की अभिरूचि जगायी गयी। इसका उपयोग छात्राएं अपने दैनिक जीवन और व्यावसायिक जीवन दोनों में ही कर सकती है।

(5) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में गेयता की क्षमता उत्पन्न हुई।

(6) पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राएं व्यावसायिकता की ओर उन्मुख हुई।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में लोक सांस्कृतिक चेतना के साथ ही जीवनोपयोगी क्षमताओं का विकास हुआ।

2. प्रश्नोत्तर विधि एवं सामूहिक चर्चा के माध्यम से छात्राओं का मूल्यांकन किया।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. लोक साहित्य की भूमिका – डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय

2. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ0 सत्येन्द्र

5. सहायक ग्रन्थ :

1. लोक साहित्य के प्रतिमान – डॉ0 कुन्दन लाल उत्प्रेती

2. भारतीय लोक साहित्य – डॉ0 श्याम परमार

M.A. SEM-III P-IV

COURSE CODE:2.210

एम0ए0 हिन्दी

(तृतीय एवं चतुर्थ सत्र)

चतुर्थप्रश्न–पत्र –प्रयोजनमूलक हिन्दी एवं सूचना संजाल पत्रकारिता एवं अनुवाद सिद्धान्त

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में रोजगारोन्मुख क्षमता उत्पन्न करना है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) छात्राएं सरकारी पत्रों के विविध रूपों से अवगत हुईं तथा सरकारी पत्रों को लिखना सीखा।

(2) पत्रों के प्रारूपण के साथ ही छात्राओं ने संक्षेपण, पल्लवन और टिप्पणी लिखना सीखा।

(3) सूचना संजाल के विभिन्न माध्यमों जैसे फैक्स, ई–मेल, इण्टरनेट आदि के कियाकलापों और प्राप्त होने वाले लाभों को छात्राओं ने ग्रहण किया।

(4) चतुर्थ सत्र में छात्राओं ने समाचार की संरचना का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। इस अर्जित ज्ञान द्वारा समाचार लेखन के गुण एवं व्यावहारिक सावधानी से अवगत हुई।

(5) प्रेस संबंधी वैधानिक प्रावधानों के ज्ञान ने उन्हें प्रेस प्रकाशन के लिए सजग और सावधान बनाया।

(6) अनुवाद सिद्धान्त के ज्ञान ने उन्हें सफल अनुवादक बनने की प्रेरणा दी।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम व्यावहारिक, उपयोगी रोजगारपरक क्षमताओं, कौशल और रोजगार की अभिरूचियों को उत्पन्न करने वाला है।

2. प्रश्नोत्तर विधि, सामूहिक वार्ता, सुलेख कार्य द्वारा छात्राओं का मूल्यांकन किया गया।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी –डॉ0 कमल कुमार बोस

2. हिन्दी पत्रकारिता – डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र

5. सहायक ग्रन्थ :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ0 बालेन्दु शेखर

2. हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास – डॉ0 अम्बिका प्रसाद वाजपेयी

3. अनुवादः सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ0 कैलाश भाटिया

M.A. SEM-III P-V

COURSE CODE:2.220

एम0ए0 हिन्दी

(तृतीय एवं चतुर्थ सत्र)

पंचम्प्रश्न–पत्र –शोध आलेख/निबन्ध

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में अनुसंधनात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न कराना है। निबन्ध के माध्यम से विषय को सम्पूर्ण समग्रता एवं वैचारिक पृष्ठभूमि में विस्तृत रूप में लिखने की कला में निपुण करना है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(1) छात्राओं में शोधपरक दृष्टि का विकास हुआ।

(2) स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ी।

(3) उदाहरणों, संदर्भ ग्रन्थों के उपयोग की कला को छात्राओं ने व्यावहारिक रूप में सीखा।

(4) निबन्ध के पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में वैचारिक और तार्किक क्षमता का विकास हुआ।

(5) तथ्यों को विस्तार से लिखने की कला को छात्राओं ने सीखा।

(6) भविष्य में अनुसंधान कार्य के लिए छात्राएं प्रेरित हुई

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा छात्राओं में अनुसंधान की प्रवृत्ति का विकास हुआ।
2. निबंधों के माध्यम से उनकी गद्य शैली सशक्त हुई।
3. सामूहिक वार्ता, वाद–विवाद, प्रश्नोत्तर विधि द्वारा छात्राओं का मूल्यांकन किया गया।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. साहित्यिक निबन्ध – डॉ0 नगेन्द्र
2. साहित्यिक निबन्ध – गणपति चन्द्र गुप्त

5. सहायक ग्रन्थ :

1. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 नगेन्द्र
3. त्रिवेणी – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल